सम्पादक वी. एस. पथिक।

रजि० नं०

एक प्रतिका मूल्य -)॥

रे मदान्ध 'गज'! सावधान! अब निशा नहीं है॥ अब यह तेरे लिए सुरक्षित दिशा नहीं है!
जगा लोकमत—'सिंह' क्रान्ति-'रवि' उदय हो चुका॥॥ भाग! अन्यथा सब जीवन का समय हो चुका!!

वर्ष प्र० { वर्धा० विजया दशमी शुक्रवार सं० १९७७ ता० २२। १० १९२० } अंक १

—प्राचीन राष्ट्रीय त्योहार विजया दशमी के उपलक्ष्य में हम पाठकोंको बधाई देते हैं।

—जनरल पोस्ट मास्टर के पोस्टल रजिस्ट्री नम्बर समयपर न भेजने के कारण पत्र देरसे निकल रहा है आशा है पाठक हमें इस के लिए क्षमा करेंगे।

—पत्र छपते समय खबर मिली है कि 'उदयपुर चित्तोड़' मैंगमैंट के मामले की जांच करने के लिए श्री० उदयपुर नरेशने एक कमीशन नियुक्त किया है जिसमें मेवाडके आमात्य श्री दामोदर लालजी भी हैं। कहीं, इस कमीशन पर 'बिजोलिया कमीशन' की छाया न पड जाय!

—वर्धा जिलेसें कौंसिल की मेम्बरी के लिए श्री राजमा गोची खडे हुए हैं!

—सुरतमें "राष्ट्रीय कालेज" के खर्चके लिये व्यापारियोंने स्वय रुई के देन लेनपर, प्रति खण्डी और बिनौले पर -) प्रति गाड़ी टैक्स लगा लिया है। इस से १३००० वार्षिक आय होगी। आशा की जाती है कि अनाजके व्यापारी भी शीघ्र ही उनका अनुकरण करेंगे!

—"गुजरात राष्ट्रीय शिक्षण" मण्डल ने अहमदाबाद में "गुजराती राष्ट्रीय विश्व विद्यालय स्थापित किया है, परीक्षाएं आगामी मार्च से होंगी।

—हर्ष की बात है कि अजमेर में 'आर्बिट्रेशन' कोर्ट खुलगई है और एक 'राष्ट्रीय स्वयम् सेवकदल संगठित हो गया है।

—'आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी ने इंगलेण्ड के कुछ प्रसिद्ध कानून वेत्ताओं से यह पूछाथा कि पञ्जाब में अत्याचार करने वाले डायर आदि पर मुकद्दमा चल सकता है या नहीं? उत्तर में उन्हों ने राय दी है कि सर माइकेल ओडायर को छोडकर जनरल डायर आदि पर मुकदमा चल सकता है।

—इंगलैण्ड में जिस बडी देशव्यापी हडताल के होने की सम्भावना थी, वह २० ता. से हो गई। कोयले की खानों में काम करनेवाले १०००००० दस लाख मजदूरों ने एक साथ काम छोड दिया है। अब सुना है कि अन्य विभागों के भी लाखों मजदूर हडताल करने की तयारी कर रहे हैं! देखे नि० लायड जार्ज अब अपने दिमाग में से कौनसा जाल निकालते हैं।

—'कोटा' राज्यसे बडी सनसनी के समाचार आए हैं? यहां की जनता ने अनाजपर कण्ट्रोल करने और जीवनोपयोगी सामग्री सस्ती करनेका प्रबंध करनेके लिये अधिकारियोंसे प्रार्थना की परन्तु सुनाई नहीं हुई, अन्तमें मुक्खड़ मजानें लूट मार आरम्भ कर दी, धीरे २ लूटने वालों की संख्या १०००० तक पहुंच गई, स्टेशनपर मालगाडियाभी लूटी गई और शहरभी लूटा गया! इसका पूरा विवरण हम आगामी अंकमें देंगे। पकड़ धकड़ जारी है! बुभुक्षित: किम् करोति पापम्?

—आयरलैंड कौंसिल फ़िनर इंग्लैण्डमें मारकाट मचानेके लिए एकदल संगठित कर रहे हैं। २० ता० को हाउस आफ़ कामन्समें आयरिश प्रश्नोंपर बहस होने वाली थी?

—खबर मिली है कि हिन्दूविश्व विद्यालय के छात्रोंनेभी अलीगढ़वाले के विद्यार्थीयोंका अनुकरण करने का विचार किया है?

—लंदनमें एक और १८०००० रोड ट्रान्सपोर्ट. वर्कर्स की हडताल होने वाली है। ये प्रति सप्ताह कमसे कम ८७ शिलिंग मजदूरी चाहते हैं, सब शाखाओं को हडताल कमेटियां संगठित करने और हडताल के लिए तयार रहनेका सूचित कर दिया गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति।

इस समय संसारकी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बड़ी ही डावांडोल है। जिस ओर देखो उस ओर क्रान्तिके भीषण गर्जन के अतिरिक्त कुछ सुनाई नहीं देता। योरोपके प्लेटफार्म पर शान्तिस्थापित करने वालोंकी कमी नहीं परन्तु शान्ति उनसे दूर भागती नजर आती है।

आयरलैंडमें स्वाधीनताकी लहरके सामने ब्रिटिश सत्ताकी नाव डगमगा रही है। देशभरमें हत्याकाण्डकी भर मार है। सिनफीनर लोग, जहाँ देखते हैं अंग्रेजी पुलिस और सिपाहियोंपर गोलियां बरसाते हैं। [illegible] बारूदें उड़ा देते हैं। डाक गाड़ियाँ रोककर सरकारी डाक उड़ा ले जाते हैं। आये दिन अफसरोंके खून करते हैं। रेलवे और बंदरगाहोंके मजदूर कई मास हुए पुलिस फौज और गोला बारूदका सामान [illegible] इनकार [illegible] गया। किसी [illegible] निवेदन [illegible] कर चुके हैं; बात यहाँ तक बढ़ गई है कि गार्डों और ड्राइवरों तकने रेलें चलानेसे इंकार कर दिया है। आज [illegible] और इस [illegible] प्रायः ३००० खून और [illegible] हुए हैं। केवल एक वर्ष में १०९ पुलिसवाले मारे गये और ९ अक्टोबरको समाप्त होनेवाले एक ही सप्ताह में पुलिस पर ९३ हमले हुए। एक ओर यह हालत दूसरी ओर पुलिस और फौज ने अंधाधुंध लूट मार करना घरोंको आग देना और अन्य पाशविक अत्याचार करना शुरू कर दिया है। इन बातोंसे प्रजा बहुत भड़क रही है। उधर अधिकांश लोग प्रजातन्त्र चाहते हैं और अंग्रेजोंसे हार्दिक घृणा करते हैं। इधर सरकार उन्हें साम्राज्यके अंतर्गत पूर्ण स्वराज्य भी देना नहीं चाहती। मिस्टर [illegible] है कि ऐसा करने [illegible] देना [illegible] करके [illegible] है मिलकर उसे नाश करनेका प्रयत्न करेगा। शांति स्थापनके नामपर एक स्वेच्छाचारी कानून पास हो चुका है। परंतु फल उल्टा होरहा है। सरकार ज्यों ज्यों, कड़ाई कर रही है, त्यों त्यों जनता अधिक भड़क रही है और सिनफीन प्रजातंत्र सरकारको ही अपनी वास्तविक सरकार समझती जारही है परंतु सिनफीन पार्लिमेण्ट की सर्वप्रियताका कारण अंग्रेजी सेना और पुलिसके अत्याचार ही नहीं हैं। मुख्य कारण है सिनफीनरोंका अद्भुत शासननिर्माण। जहाँ एक ओर वे ब्रिटिश सत्ताका नाश कर रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर प्रजातंत्र शासनके प्रत्येक महत्व पूर्ण विभागका अद्भुत संगठन भी करते जारहे हैं। सिनफीन न्यायालय के [illegible] और [illegible] किसान गरीब था, उसके निर्णय, एवं सिनफीन बैंकोंकी प्रमाणिकता व्यवस्था और प्रबन्ध ने देशकी साधारण जनताको इतना आकर्षित कर लिया है कि ब्रिटिश न्यायाधीशों और बैंक मैनेजरोंको बहुत थोड़ा काम रहताहै। साथ ही दो लाख सिनफीन स्वयंसेवक सेना है जो शांति रक्षाके प्रायः सभी काम करतीहै। जिन चोरियोंको अंग्रेजी पुलिस नहीं ढूंढ सकती उन्हें सिनफीन स्वयं सेवक ढूंढ निकालते हैं। और विचित्रता यह है कि ये लोग दिनमें अपना धंधा करते हैं और रातको छः छः घंटे गुप्त स्थानोंमें फौजी कवायद सीखते हैं। एक और महत्वपूर्ण काम सिनफीन सरकारने यह किया है कि देशके प्रसिद्ध अर्थशास्त्रवेत्ताओं और विशेषज्ञोंकी एक जांच कमेटी द्वारा देशके खनिज और खाद्य पदार्थों तथा अन्य पैदावार का ब्यौरा प्राप्त कर लिया है और देशके उद्योग धंधोंकी उन्नतिके उपाय निश्चित कर लिये हैं। इस प्रकार [illegible] पार्लमेन्ट और पुलिस [illegible] दोनोंही अपने निश्चय पर डटे हैं। परन्तु आशा नहीं कि यह अवस्था अधिक दिन बनी रहे, क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्य के प्रत्येक भागमें अशान्तिका बवंडर बड़े जोरोंसे उठ रहा है और [illegible] उसे इस बवण्डर के सामने बेतरह झुकना पड़ा है। उदाहरण के लिये युद्धकालमें इंग्लैण्ड ने मिश्रको तुर्कीसे छीनकर अपने अधिकार में ले लिया था और वचन दिया था कि समर समाप्त होते ही उसे मुक्त कर दिया जायगा। परन्तु मिश्रके नशेमें इंग्लैण्डको साम्राज्यतृष्णाने इतना अंधा कर दिया कि उसने अपना पंजा स्थायी करनेकी व्यवस्था रच दी। बस, देश भरमें विरोध उबल पड़ा। इसपर दमननीति आरंभ हुई और फौजी कानून चलाया गया। परन्तु [illegible] के नेतृत्वमें मिश्रियोंने असहयोगका ऐसा [illegible] उपस्थित [illegible] भीषण संग्राम [illegible] किया कि सत्ताधारी कांप उठे। मीठी मीठी धोखेकी बातें की गई परन्तु जनता इतनी सजग होगईथी कि नीति का चक्र चलही न सका। [illegible] और मिश्रीतकने अंग्रेजों और उनके प्रस्तावोंका बहिष्कार किया और राष्ट्रीय पक्षने स्वाधीनता की घोषणा कर दी। अन्तमें अभिमानी इंग्लैण्डको हार मान कर मिश्रकी स्वाधीनता स्वीकार करनी पड़ी।

हाल ही में एक नई बात मालूम हुई है।

राजधानी कैरोमें कुछ दिनसे "[illegible] सोसाइटी" के ९८ सदस्योंपर षड्यंत्रका एक बहुत बड़ा मुकद्दमा चल रहा है। इस सोसाइटी का उद्देश मिश्रकी स्वतंत्रताके बाधक मिश्री और अंगरेज अफसरों और मंत्रियोंका खून करना था। अभियुक्तोंमें भूत पूर्व प्रान्तीय गवर्नर अब्दुर्रहिमान, कई वकील, प्रोफेसर और विद्यार्थी शामिल हैं। इस सोसाइटी के पक्षमें मिश्रमें और सहायकदाता संसार भरमें हैं। चार अभियुक्तोंको छोड़कर शेष सब दोषी ठहरे हैं। इन बातोंसे मिश्रकी अवस्थाका पाठक अंदाजा लगा सकते है।

तुर्की, अरब और ईरान।

तुर्कीमें भी सन्धिकी शर्तोंके विरुद्ध बड़ी भारी अशांति फैल रही है।

बाकू में हालहीमें तुर्की, ईरान, अरब, अफगानिस्तान और भारतके १८०० बोल्शेविक प्रतिनिधियोंकी एक बड़ी सभा हुई जिसमें रूसी सरकारकी ओरसे गर्व पूर्वक कहा गयाहै कि वे ५ वर्षमें यूरोप के साम्राज्यवादियोंको एशियासे निकाल देंगे।

ईरान और इंग्लैंडमें जो कुछ दिन पहले समझौता हुआहै उससे ईरानभी संतुष्ट नहीं प्रतीत होता, क्योंकि वह ईरान की स्वाधीनता के अपहरण करनेका एक अंग्रेजी अस्त्र समझा गया है। इसीसे अभी ईरानी असेम्बली-मेण्टने भी उसे पास नहीं किया

मेसोपोटेमिया और सीरिया के अरब लोगभी मैण्डेट के बहानेपर अपनी स्वतंत्रता हड़प हो जाने से बेहद नाराज हैं। वहां जगह जगह अंग्रेज और फ्रांसीसी सेनासे लड़ाई जारी हो गई है। दिल्लगी यह है कि ब्रिटिश सरकारने अरबोंका स्वाधीन (!) राज्य स्थापन करने को सर पर्सी कॉक्स को बगदाद भेजा है। कुछ भी हो, यह निश्चितसा है कि अंग्रेजों को शीघ्र ही अरब देश खाली करना पड़ेगा।

रूस, बोल्शेविक सरकार और पोलैण्डमें संधि हो गई। फिनलैंडवालोंने भी रूससे सुलह करली है। ब्रिटेन और रूसमें व्यापारिक सम्बन्ध फिरसे आरंभ होनेकी बात चीत कई मास से चल रही है। हाल के ब्रिटिश नोट के उत्तर में सोवियट सरकार ने रूसी कैदियों के बदले में अंग्रेज कैदियों को छोड़ना तो स्वीकार कर लिया है परंतु वे एशियामें बोल्शेविक मतका प्रचार कार्य बंद न करेंगे।

राजस्थान केसरी

शुक्रवार "विजयादशमी" १९७७

अवतरण

संसारमें सबके दिन बराबर नहीं होते। पतनके बाद उत्थान और उत्थानके बाद पतन, जीवनके बाद मृत्यु और मृत्युके बाद पुनर्जन्म, ये सब काल चक्रके साधारण कार्यक्रम हैं। देवी शक्ति भी काल चक्रके नियमोंसे मुक्त नहीं। एक दिन वे भी स्वतंत्रताकी रक्षा करनेवाले संघ थे और स्वर्गके देवता तक यहां नर शरीर धारण कर रहनेमें अपना गौरव समझते थे। परंतु आज न वे "राम" हैं न वह "अयोध्या"। एक दिनथा जब राजस्थान केसरीका यह कर्म-क्षेत्र देशी राज्योंके आधीन भारत स्वतंत्रताका प्रमोदोद्यान था। नील नभो मण्डलसे जैसे बालसूर्य लोक हितार्थ पृथ्वीपर प्रकाश फैलाता है, आकाशके तारे क्षुद्र होने पर भी जिस प्रकार निःस्वार्थ भाव से भूले हुए पथिकोंको पथ एवं दिशाओंका ज्ञान कराते हैं, पतित पावनी जान्हवीके सुधासलिलका प्रत्येक बिन्दु जिस प्रकार एक क्षणभी विश्राम लिये बिन, ईश्वरके पैरोंको छोड़ता हुआ नीरस मरुखण्डोंको सरस बनाकर क्षुद्रोंकी सेवामें निमग्न रहता है, उसी प्रकार एकदिन इस क्षेत्रके निवासी भी अपने जीवनका उद्देश्य परोपकार और लोकसेवाही समझते थे, उस दिन यहां निरन्तर बहनेवाली नद-नदीमें कितनी शौर्यकी लहरें और आत्म त्यागकी तरङ्गें उठती थीं. कितने हिंसक शिकारी उनके भँवरमें पड़कर प्राण दे देते थे, ये सब बतानेसे अब क्या लाभ? जिस समयकी अवस्थाका प्रतिबिम्ब इन पंक्तियोंमें पड़रहा है, उस समय यदि भारतवर्ष संसारकी अमरावती थी तो हमारा यह कर्मक्षेत्र उस अमरावतीका नंदन कानन था। इस काननमें पारिजातसे लदी हुई, निर्झरोंसे सिंचित एक सुखमयी, सौन्दर्यमयी, आनंदमयी, कुञ्ज थी और इस कुञ्जमें स्वतंत्रता देवीकी मूर्ति अन्तर्बाह्य जगतको आलोकित करती हुई विराजमानथी।

प्रताप, दुर्गादास, छत्रसाल और शिवाजी सदृश उपासक शिर-सुमन चढ़ाकर उसकी पूजा करते थे, और अपनी अस्थियोंकी ईंटें एवं अपने रक्त मांस निर्मित गारेसे उसके मन्दिरकी मरम्मत!

जिस समय संसारने स्वतंत्रता की वर्णमाला भी पढ़ना शुरू न की थी, उस समय यहां छत्रसाल प्रताप, और शिवाजी जैसे वीरोंमें स्वतंत्रता के लिये महलोंको छोड़कर भीलों के घरों और पहाड़ोंकी गुफाओंमें रहना एवं चांदी सोनेके थालोंमें उत्तम भोजन करनेके स्थान पर पत्तलोंमें कन्द-मूल भक्षण करना उत्तम समझा जाता था। जिस समय संसारमें अछूतोंको अपनाने की कल्पना भी नहीं की गई थी, उस समय मेवाड़में भीलों तकको राजा चुननेका अधिकार दिया गया था। जिस समय कौंसिलें बनाने और राजाको आखिर प्रजा प्रतिनिधियोंका नियंत्रण रखनेकी प्रथा लिपिबद्ध भी नहीं हुई थी, उस समय जोधपुर, कोटा, जयपुर, काठियावाड़ और उदयपुर, आदि दरबारोंमें प्रान्तिक कौंसिलोंकी राय बिना न कोई कानून बन सकता था न रद्द हो सकता था। यही क्यों, संसार जिस समय स्वराज्य शब्दसे सर्वथा अपरिचितथा, उस समय यहांकी जनता शासकोंको अपनी इच्छानुसार अंगुलियों पर नचातीथी एवं न्याय और प्रजाहितके लिये जागीरदार अपनेही नरेशके विरुद्ध खड़े होने और देश त्याग तक कर देनेमें पीछे नही हटते थे।

महाराणा उदयसिंहके भागजानेपर भी जनता और जागीरदारोंने चित्तौड़पर, स्वतंत्रताके लिये अपना रक्त बहाकर मेवाड़के गौरवको स्थिर रखाथा। महाराणा अमरसिंह की इच्छा न होनेपरभी जनताने उनको युद्ध-स्थलमें जानेको विवश कियाथा। जोधपुर महाराज गजसिंहके पाटवी पुत्र होनेपरभी, मारवाड़ी जनता और सर्व साधारणने, कुमार 'अमरसिंह' को देशसे निकलवाकर छोड़ा था। जोधपुर महाराज मालदेवका देहान्त होनेपर उनके तीन ज्येष्ठ पुत्रोंके उपस्थित रहतेभी उनके छोटे पुत्र चन्द्रसेनको जनताने बलपूर्वक गद्दीपर बिठा दियाथा। पिताके प्रस्तावित, बादशाहके आधीन हो जाने और डोला देना स्वीकार करनेपर जोधपुर नरेश रायमल्लजीके पुत्र कल्याणसिंह ने अपने पिताके विरुद्ध स्वतंत्रता का झण्डा उठाया और जनताने उनका साथ दियाथा, और इसी प्रकार कोटा रियासतमें जनताके ऊपर अनुचित 'टेक्स (लागतें)' लगानेपर इसके विरोधमें वहांके चारण जागीरदार 'भैंसानीदान' देशत्याग कर गयेथे। अधिक क्या, जो धनवानों, जमींदारों और जागीरदारोंके "प्रतिनिधि-तंत्र" आज योरोपके अनेक देशोंमें विद्यमान हैं, वे यहां लगभग प्रत्येक रियासतमें मौजूदथे और जो साहस आज वहांकी प्रजामें है, वह यहांकी प्रजाका एक स्वाभाविक गुण था। यह दूसरी बात है कि ये बातें इतने सुव्यवस्थित रूपमें न रही हों। परन्तु यह समझ लेनेका कोई कारण नहीं कि देशी राज्योंमें कभी स्वराज्य था ही नहीं, यहांके नरेशोंकी शक्ति पर कभी किसीका नियन्त्रण रहा ही नहीं और यहांकी प्रजा अन्यायके विरुद्ध अपनी शक्तिका प्रयोग करना जानती ही न थी। अस्तु, यदि अनुकूल अवसर मिलता तो कौन जाने क्या होता? परन्तु लोगोंका सोना हुआ कुछ भी न हुआ। 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' की कूटनीति की शराब और यवन साम्राज्यके आकस्मिक पतनने अपना वह प्रभाव जमाया कि यह प्रदेश सब आकांक्षाओंको मनकी मनमें लिये एकदम गहरी निद्रामें निमग्न होगया!

× × ×

वह नंदनवन, वह सुखकुञ्ज अरण्य होगया और वह मन्दिरभग्नावशेष खण्डहर! वे उपासक-कुसुम, कुसुमसे नक्षत्र, नक्षत्रसे गगन और गगनसे निराकार-सर्वाधारके रूपमें परिणत होगए! रहगई वायुमण्डलपर केवल उनके पवित्र सौरभ की गहरी लहरें, और स्मृतिपत्रोंपर बलिदान होते समयके उनके हँसते हुए मुखोंकी आकृतियें।

आज संसारमें शिशिरके दौर दौरेके बाद, रंग बिरंगे फूलोंसे सजकर साम्यवादकी सौरभके साथ फिर वसन्त आया है। वृक्षोंमें नवीन पल्लव और शाखाओंमें नवीन पुष्प निकल आये है। भ्रमरोंका झुण्ड, 'गुन. गुन' की धुनमें मस्त है, और समीरकी प्रत्येक श्वास स्वतंत्रताकी गन्धसे सुवासित। नवीन-हृदय मन्दिरोंमें नये ढंगसे नए रूपमें स्वतंत्रता देवीकी प्रतिष्ठा होरही है, और नवीन जीवन, नवीन उत्साह, नवीन आशा, नवीन सौन्दर्य, नवीन प्रफुल्लता और नवीन शोभासे जगत महकाया होरहा है। परन्तु यहां:—

"वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो अब भी है!"

प्रांत वही है, भूमि आकाश, नक्षत्र चन्द्र सूर्य सब वही हैं, धनराशि वही है, मारवाड़ी वही हैं, रंग वही है ढंग वही है! यदि नहीं है, तो केवल स्वतंत्रता, निर्भीकता, न्यायप्रियता और कर्तव्य निष्ठता—कर्तव्य पर बलि हो जाने की शक्ति! सन्दूक पड़ा है परंतु उसमें रखी हुई जीवनभरकी कमाई किसीने चुराली है। शरीर पड़ा है, किन्तु प्राणोंका पता नहीं है!

III 139

मनुष्य हैं, किन्तु मनुष्योंके प्रेतात्माओंकी तरह ! गांव हैं किन्तु भेड़ोंके बाड़ोंकी तरह ! सरोवर हैं, किन्तु मृग मिरचिकाकी तरह ! हृदय हैं, किन्तु निर्जीव पत्थरकी तरह:—

"कुछ नहीं फर्क बागो जिन्दामें"
एक बुलबुल नहीं गुलिस्तांमें !

इसी कर्म क्षेत्रमें विचरण करने, भारतवर्ष और संसार की सेवामें समुचित भाग लेते हुए, इसी क्षेत्रके निवासियोंको जगाने, कर्तव्य पथ दिखाने, अपनी क्षुद्र शक्तियों द्वारा उन तक नवीन युगका संदेश पहुंचाने और उनके उत्थान में सहायता देनेके लिए "राजस्थान केसरी" का अवतरण हो रहा है। देशी राज्यों के आधीन भारत इस समय निद्रा और जागृतिकी मध्य-रेखा पर तंद्राकी अवस्थामें झूल रहा है। उसके प्रत्येक विभागमें अशान्ति, असन्तोष, और आत्मग्लानि के चिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे हैं और ये, एक तन्द्राके पाशको तोड़कर उठ बैठने के लिये अकुलाने वाले प्रान्तके लक्षण हैं !

अतः हमारा प्रयत्न होगा कि यह तन्द्राकापाश जितना शीघ्र टूट सके, उसे तोड़ दें ! हमारा विश्वास है कि हमारा देश जितना जल्दी सोया है, उतनी ही शीघ्रता यह उठने और कर्मपथ पर बढ़कर दूसरों के बराबर पहुंचनेमें दिखावेगे सामर्थी। हमारा विश्वास है कि हमारी जीवन शक्ति दब भलेही गई हो, निकम्मी या नष्ट नहीं हो गई है ! अतएव हमारा प्रयत्न होगा कि साधना के प्रभावसे ही वह अधिक दिन तक इस अवस्थामें न रहे। हम देशी राज्योंकी उन्नति के विशेष पक्षपाती होंगे, परंतु केवल इसलिये कि, उन्हें संसारकी सेवा के लिए अधिक योग्य बनावें। हम स्वेच्छाचार और अन्यायके विरोधी होंगे परंतु केवल विरोध वासनाकी पूर्तिके लिए नहीं, प्रत्युत इस लिए कि, कोई किसी पर अन्याय न करे, और कोई किसीका अन्याय न सहे। कोई किसीको गुलाम न बनावे और कोई किसीका गुलाम न बने ! जो मनुष्य होते हुए भी पशु-जीवन बिताने को बाध्य हैं, वे अपने मनुष्य जीवन को सार्थक बना सकें, और जो पशु होते हुए भी देवताकी गद्दी पर अधिकार जमाए बैठे हैं, वे अपने योग्य स्थान पावें या उक्त स्थानके योग्य बनने को बाध्य हों और इस प्रकार संसारमें पुनः न्याय की सत्ता प्रतिष्ठित हो ! पद रज ग्रहणही अपना धर्म समझने वाली आत्माएंभी अपने रूपको पहचान कर स्वतंत्र वायु मण्डलमें श्वासोच्छ्वास ले सकें और अपने ही समान इन्द्रिएं, मन, बुद्धि शरीर रखने वालों के सिरों पर पैर रखकर चलनेके व्यसनीभी कंकरीली भूमिकी कठोरताका अनुभव कर, मनुष्य को मनुष्य समझना सीखें !

इस पुनीत क्षेत्रमें न हमें किसीसे द्वेष होगा न स्नेह ! राजा हो या प्रजा, मित्र हो या शत्रु, कुटुम्बी हो या परकीय, सबके सम्बन्धमें न्याय और सत्यही हमारा ध्रुव होगा और इस ध्रुवके मार्गमें आने वाली बाधाओंका सामना करना हमारा पुनीत कर्तव्य ? हम जानते हैं कि हमारा मार्ग दुर्गम पर्वतोंसे घिरा और कण्टकोंसे अवरुद्ध है ? कठिनाइयों का हमारे सामने उतनाही बड़ा ढेर विद्यमान है, जितना किसी चौदहवीं शताब्दीमें देश सेवा करने वाले के सम्मुख रहा होगा ! हम जानते हैं कि इस पथ पर अग्रसर होनेमें बड़ी २ शक्तिएं हमारे विरुद्ध होंगी और वे हमारे पदचिन्ह तक मिटादेनेका प्रयत्न करेंगी ! परन्तु साथही हम यह भी जानते हैं कि इन सब शक्तियोंसे ऊपरभी संसारमें एक महा शक्ति है, जिसके आदेशका पालन करना प्रत्येक मनुष्यका अनिवार्य कर्तव्य—कर्म है, और यहकि, वही एक ऐसी शक्ति है जिसके नियमोंके विरुद्ध चलनेमें मनुष्यको भय होना चाहिए ?

उसी महान शक्तिका आह्वान करते हुए आज विजयादशमी के इस शुभ अवसर पर, कठिनाइयोंमें विजयके भावों को लिये हम अपने कर्म क्षेत्र में अवतीर्ण होते हैं। परम पिता ! हमें वह शक्ति देकि इस कठिन कर्तव्यको 'निर्लिप्त भावेन' सम्पादन कर सकें और संसारका कोई प्रलोभन एवं कष्ट हमें तेरी सेवासे न हटासके !

बी. एस. "पथिक"

संपादकीय टिपणियाँ !

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि राजस्थान केसरी जन्मसे ही सार्वजनिक सम्पत्ति है। देशीराज्यों के लिए एक राष्ट्रीय पत्र की अत्यन्त आवश्यकता का अनुभव करके ही इसे निकालनेका प्रयत्न किया गया था और फलस्वरूप कुछ चन्दा और कुछ कर्ज द्वारा इसका कार्य आरम्भ हुआ ! अनेक कठिनाइयोंमें एक कठिनाई ५०० की जमानत मांगकर सर्कार ने भी जोड़ दी। अन्तमें जिस लगन ने घोर निराशामें इसे जन्म देने के लिए आगे बढ़ने का साहस प्रदान कियाथा उस ने ही इस कठिनाई का सामना करनेका भी नहीं बल दिया ! जमानत देदी गई। परन्तु कठिनाईयोंका यही अन्त नहीं हो गया, 'राजस्थान केसरी' को चलानेका काम जिनके गले पड़ा वे सब इस क्षेत्र में एक दम नए और अनुभव हीन हैं अतःबात२में कठिनाई उपस्थित हुई। एक ओर अनुभवी लोगोंकी सहायता लेने में पत्रकी आर्थिक स्थिति बाधक, दूसरी ओर काम सुगमतासे करने में सामग्री की कमी और आवश्यकता। अस्तु इन सब कारणोंसे यदि कुछ त्रुटिएं रह गई हों तो उनके लिए हम पाठकों और मित्रोंसे क्षमा मांग लेना उचित समझते हैं और विश्वास दिलाते हैं, कि शीघ्रही हम उन त्रुटियोंको दूर करनेका प्रयत्न करेंगे। एक बात और निवेदन कर देना आवश्यक है, वह यह कि पत्रके लिए हमने सर्वसाधारणसे अभी कोई विशेष सहायता नहीं ली है। पत्र के जन्म में सब से अधिक भोग राजपुताने के एक सच्चे भक्तका है और शेष अन्य कतिपय हमारे मित्र और राजस्थान केसरी एवं राजस्थान के प्रेमियोंका। अबभी हमारी यह कामना नहीं कि राजस्थान 'केसरी' एक धनाढ्य संस्थाहो जाय। हमारी यदि कोई कामना है तो केवल यही कि 'राजस्थान केसरी' हमारे भावों कोलेकर अमीरों के महलों से लगाकर गरीब किसानों और मजदूरों तक के हाथों में पहुंचे। निराश हृदयों में आशा का अंकुर उत्पन्न करे और अत्याचार की चक्की में पिस कर मरने वालों को नवीन युग का जीवन-संदेश,सुना उनमें नवीन स्फूर्ति, उत्साह और नवीन शक्ति का सञ्चार करे। कठिनाइयां आवें, उनकी परवाह नहीं, परन्तु 'राजस्थान केसरी' अपने लक्ष्यसे न गिरे। बड़े भलेही उसकी ओर फूटी आंखसे न देखें, परंतु देशकी आशाओं के लिए वह 'गलेका हार' हो, यही हमारी एक मात्र कामना है।

*　　*　　*

'राजस्थान केसरी' के जन्म के इस शुभ अवसरपर, एकबार उस महान आत्मा; देशोद्धारक, नवीन भारत के निर्माता लो० तिलक का स्मरण आए बिना नहीं रहता, जिन्हों ने देशी राज्योंके उद्धार में हमें सहायता देने का, सबसे पहले वचन दिया था यद्यपि दुर्दैव ने आज देशी राज्योंको उस महान शक्तिकी सहायता से वञ्चित कर दिया है परन्तु हमारा विश्वास है कि भारतीय जनता के कानों में जो जीवन संदेश फूंक गये हैं, इस प्राचीन देश में जो नवीन आदर्श स्थापित कर गए हैं, वह

III 140

बृटिशभारत विभाग।

राजस्थान केसरी

शुक्रवार "विजयादशमी" १९७७

बृटिशभारत और हम।

" राजस्थान केसरी " यद्यपि देशी राज्य निवासियों का पत्र है तथापि बृटिश भारत से वह निर्लिप्त नहीं रह सकता। शासनकी दृष्टि से यद्यपि देशी राज्य बृटिश भारत से अलग हैं तथापि भारत और भारतीय की दृष्टि से वे भारत के अङ्गोपाङ्ग मात्र हैं। यही नहीं दोनों के हिताहित भी परस्पर बहुत अंशों में सम्बन्धित हैं। यदि बृटिश भारत के व्यापार पर विदेशों का प्रभुत्व रहे तो देशी राज्य उसके प्रभाव से बच नहीं सकते। यदि ब्रिटिश भारत गुलामी में जकड़ा रहे तो देशी राज्यों के वायु मण्डल में स्वतन्त्रता की गन्ध तक प्रवेश नहीं कर सकती। इसी प्रकार यदि देशी राज्य और उनके निवासी बृटिश भारत के हितों को अपने हित न समझें तो यह फूट दोनों ही पक्षों को उन्नति शिखर पर चढ़ने में असमर्थ बनादे। सार यह है कि देशी राज्यों के साथ ब्रिटिश भारत का सम्बन्ध केवल हानि लाभ का ही नहीं रक्त मांस का है। संसार हमें टुकड़े २ कर डालने की कोशिश करे किन्तु प्रकृतिने हमें एक बनाया है और हम एक रहेंगे। देशी राज्यों का एक बहुत बड़ा समुदाय, मारवाड़ी समाज एवम् इतरलोक सन्त ब्रिटिश भारत में ही रहता और व्यवसाय करता है। इन मेंसे भी एक बड़ा भाग सदैव के लिए ब्रिटिश भारत में बस गया है और इस प्रकार ब्रिटिश भारत एवं देशी राज्य शासन की दृष्टि से न सही व्यवहार की दृष्टि से एक ही हैं। ऐसी अवस्था में "राजस्थान केसरी" पर ब्रिटिश भारत की सेवा का भार भी उतना ही है जितना देशी राज्यों की प्रजाकी सेवा का। ब्रिटिश भारतके सम्बन्ध में " राजस्थान केसरी " किसी विशेष दलका पक्षपाती न होगा। देशी राज्योंकी तरह ब्रिटिश भारत के लिये भी न्याय और देश-हित ही उसका ध्रुव होगा।

'राजस्थान केसरी' का जन्म उस पवित्र अवसर पर होरहा है, जिस अवसर पर भगवान रामचन्द्रने वनवासकी कठिनाइयोंको सहन करते हुए लङ्काके परम स्वेच्छाचारी और अत्याचार पूर्ण शासन के विरुद्ध अपनी अशिक्षित वानर सेनाको हल्ला बोलनेका आदेश दियाथा। साथही उसके सम्मुख देशमेंभी वैसाही अवसर उपस्थित है। ब्रिटिश ब्युराक्रेसी-रावण हमारी स्वतंत्रता- सीता को हर लेगया है। डायर जैसे विराध और उनके अनुचर पञ्जाबमें महात्मा गांधी जैसे ऋषिका तपभंग करनेका प्रयत्न करचुके हैं। हमारी सती स्त्रियोंका अपमान किया जाचुका है। निर्दोष बच्चोंका खून बहाया जाचुका है और मदिरापूर्ण नौकरों द्वारा हमारेमें हमारे १०० योद्धा चुराए जाकर न मालूम कहां भेजे जाचुके हैं यही नहीं, इस स्वेच्छाचारको स्थायी बना देनेके लिये हमारे पासके देशोंको दासताके पाशमें जकड़ा जारहा है, और दिल्लगी यह है कि हमारे पैरोंमें पड़ने वाली यह बेड़ियां हमारे ही हाथोंसे बनवाई जारही हैं। पारस्परिक द्वेषके वशीभूत हो अपने देशकी स्वतंत्रता खोबैठनेका प्रायश्चित्त करने के पूर्व ही हमारे हाथोंसे एक दूसरा महापाप कराया जाता है और वह है, हमारे ही देशी सैनिकों द्वारा खिलाफत, मेसोपोटेमिया, सीरिया, पैलेस्टाइन और अरब आदिको सदैवके लिये गुलाम बनाना। यह दुहरा पाप है एक, दूसरे देशोंकी स्वतंत्रता अन्याय पूर्वक अपहरण करनेमें सहायता देने का और दूसरा अपनी दासत्वकी बेड़ी अधिक मजबूत बनाकर देशको सदाके लिये गुलामी की दलदलमें फँसानेका। अस्तु, विरोधियोंकी चालें यहां समाप्त नहीं हो जातीं। सुननेमें यहांतक आ रहा है कि भविष्यमें हमारे सब प्रयत्नोंको विफल करके, हमें बलपूर्वक कुचलने और हमारी सहायताके बिना ही अपने सब काम चलानेकी योजना होरही है एवं इस कार्यके लिये दक्षिण अफ्रिका और अन्य उपनिवेशोंके आदिम निवासी तयार किये जा रहे हैं। ऐसी अवस्थामें देशके लिये तुरन्त असहयोगास्त्रके प्रयोग करने और पूर्ण रूपसे स्वतन्त्रताका संग्राम आरम्भ कर देने के अतिरिक्त कोई उपाय ही नहीं रहा वह इस समय एक ऐसी रेखा पर आपहुंचा जहां ठहरने को बिल्कुल स्थान नहीं! कर्तव्या-कर्तव्यकी समस्या धर्मके सम्मुख है धर्मने व्यवस्था दे दी है कि "आगे बढ़ो! देशके सर्व दूरदर्शी नेता महात्मा गांधी ने इस व्यवस्थाको सुना और स्वार्थ के भंवरमें गोते खाते रहने वाले हृदयोंसे आवाज उठी, कि, क्या इस संग्रामके लिये देश तयार है, जनता सशक्त है? उत्तर मिला "शक्तिभी संग्रामसे ही आती है। बिना जलमें कूदे तैरना नहीं आ[illegible] इस के अतिरिक्त अन्यायका प्रतिकार और देशकी रक्षा करते समय मनुष्यको साधनकी अपेक्षा कर्तव्य पर ही अधिक विचार करना चाहिये। मध्यकालीन स्वतंत्रता के उपासक महाराणाप्रताप, शिवाजी छत्रशाल दुर्गादास आदि वीरोंने कभी ऐसे अवसरोंपर शक्तिकी प्रधानता नहीं दी! पापियोंके पापकर्मोंमें सहायता देना महापाप है और पापसे बचने के समय शक्तिकी कमी सोच कर उसमें लिप्त होजाना कायरता!"

समर भेरी बज चुकी! संग्राम की तय्यारियां देश के कोने कोने में आरम्भ हो गई हैं। समुर स[illegible]

> सरस न हो, न सही, किन्तु आपबीतीतो कहलेने दो!
> क्षुद्र-शक्ति है, किन्तु क्षेत्र में तनिक खड़ा रह लेने दो!
> रह न जाय अरमान, कर्म पथ पर थोड़ासा बहने दो!
> आंच ही सही, एक बार इस बलि वेदी पर चढ़ने दो!
> यश, वैभव की चाह नहीं, सिर, मौर रहे या भार रहे!
> है चाह अपार यह है, जगमें स्वाधीन व्यापार रहे!

नैतिक देश के जीवन और सम्मान पर आगे बढ़कर महान आपत्तिका सामना करने की क्षेत्रमें मोर्चे बन्दी करने लग गए हैं और भीरु हृदय व्यक्ति कायर जैसे लपेटते लौटते और २ खिसकते जा रहे हैं। देशीराज्योंके अधीन भारत अपने महाकालीन वीर कर्मोंके कारण सैनिक-भारत के नाम से प्रसिद्ध है और एक सैनिक के लिए कोई अवसर इससे अधिक सौभाग्य का नहीं हो सकता कि उस क्षेत्रमें अवतीर्ण होते ही अन्याय के विरुद्ध संग्राम कर अपने सैनिक नाम को सार्थक करने का मौका मिले। अतः राजस्थान केसरी भी ऐसे अवसर पर अपना अवतरण होना अपने लिए गौरव शाली समझता है और इस धार्मिक संग्राम में एक सैनिक की हैसियतसे गीता के निम्न लिखित श्लोक को स्मरण करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता है:—

> यदृच्छया चोपपन्नं
> स्वर्ग द्वारं पावृतम्।
> सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ
> लभन्ते युद्धमीदृशम्॥

संपादकीय टिप्पणियाँ!

भारतीय सर्कारी नौकर कहनेको हमेशा यह कहते रहते हैं कि हम भारतीय प्रजासे सहयोग चाहते हैं परन्तु उनके काम सदा ऐसे होते हैं कि जिनसे यदि किसीको यत्किंचिद् विश्वास हो भी तो वह समूल नष्ट हो जाय। रतौना के कसाई खाने का जिस समय देश भरमें विरोध हो रहा था, उसी समय सागर के इस कसाई खानेको जो वहांकी म्युनिसिपौलिटी के हाथमें था म्युनिसिपौलिटी ने बंद कर दिया था, सर्कार ने इसे अपने हाथ में ले लिया। जब जनताने विरोध किया तो नागपुर से चीफ कमिश्नर ने उत्तर दिया कि १८–२० तारीख तक गाएं मारना आरम्भ न किया जायगा। एक ओर यह वचन दिया गया और दूसरी ओर १५ ता. की रातको फौजी केंपमें, हिन्दू कोई जाने नहीं असिस्टेंट मि. वैकने १० गाएं कटवा डाली। इस घटना से जनता में भयंकर असंतोष फैल गया और सुबह ९ बजते बजते बाजार बंद हो गया। क्या हम आशा करें कि उच्चाधिकारी इस घटनापर कुछ प्रकाश डालेंगे?

अधिक दिन नहीं हुए जब लोग विशेष कर सर्कारी नौकर तथा सोसाइटियों के नामसे दूर भागते थे परन्तु भला हो महँगी का जिस ने यह सब भ्रम दूर कर दिया। यह महँगी देवी की ही कृपा है कि आज देशमें पोस्टल यूनियन, रेल्वे यूनियन, कुली यूनियन आदि अनेक संस्थाओंकी धूम है। महँगी दुष्काल समान है सम्वत १९५६ से अधिक महँगी वस्तुएंकी जाने पर भी इस महँगाई के स्वभाविक और स्थायी होनेमें सन्देह नहीं। परन्तु देखनेमें यह आ रहा है कि सर्कार और धनाढ्य लोग इसका स्वाभाविक ढंगसे सामना करने में आना कानी करते हैं। पोस्टमैनों की तनखाहें बहुत सोच विचार कर भी १८ मासिक ही रखी हैं। शहरी जीवन इस १८ मे एक मनुष्य का भी कठिनता से चल सकता है। उधर दूसरी ओर सुना है सी. आय. डी. को बहुत अधिक तरक्की दी गई है। सरकारका ऐसा करना अनुचित नहीं क्यो कि सी. आय. डी. उस का 'लाडला' महक्मा है। परन्तु उसकी यह गलती अवश्य है कि यह काम ऐसे ढंगसे नहीं करती कि लोगों को टीका करने का अवसर ही न मिले। अच्छा तो यह होता कि इस ढंगकी दुरंगी तरक्की करने के पहले सर्कार एक कानून इस ढंगका बना देती कि सी. आई. डी. कोछोडकर अन्य महकमोंमें केवल 'अंकेले राम' लोग ही नौकरी कर पाते।

जबसे सच्चे नेताओं, स्वार्थ त्यागियों और कार्यकर्ताओंकी कसोटी असहयोग प्रस्ताव कांग्रेसमें पास हुआ है तबसे देशभक्ति के ठेकेदारों का दिमाग ठिकाने नहीं रहा। अपनी दुर्बलता छिपाने के लिए कहीं जनता की असमर्थता के बहाने लिए जाने लगे हैं कहीं प्रोग्रामकी अव्यवहार्यता के। यदि बात यहीं तक रहती तो इतनी बुरी न थी, परन्तु देखनेमें यह आ रहा है कि बुद्धिमान लोग इतने ही पर संतोष करनेको तयार नहीं। इधर खापर्डे महोदय और उनके अनुयायियोंने महात्मा गांधी को गालियं देनेका ठेका लिया है और दूसरों ने प्रत्येक असहयोग के समर्थककी निन्दा करनेका। सी. पी. में डा. मुंजे और श्री. जमनालाल बजाज असहयोगके सबसे ज़बरदस्त समर्थक हैं। श्री. जमनालाल देशकी उन आत्माओंमेंसे एक हैं, जो बिना किसी बाह्य प्रदर्शनके निरन्तर कर्तव्य पालनमें लगी रहती हैं और कठिन से कठिन परिस्थितिमें भी परिवर्तन कर डालती हैं और जिनका धनार्जन, व्यवसाय, अध्ययन आदि सब कुछ देशके लिए होता है। श्री. जमनालालजी जितना आर्जन करते हैं उसकी तुलनासे बहुत अधिक देश सेवामें खर्च करते रहते हैं। उदाहरण के लिए श्री. जे. सी बोसकी विज्ञान शाला के लिए उन्होंने ७५००० जियां बालाके लिए ११००० बोलपूर शान्तिनिकेतनके लिए५००० हिन्दू युनिवेंसिटीके लिए ५०००० सत्याग्रह आश्रमके लिए २१००० और ८०००० वर्धा मारवाड़ी शिक्षा मण्डल को दिए हैं। इसके अतिरिक्त छोटे मोटे सैकडों देश हितकर कार्य और संस्थाएं उनके आश्रयमें चलती हैं। कांग्रेसमें आप सदा नियमपूर्वक प्रतिनिधि हो कर जाते हैं। आपकी शक्तियों का सदैव देश हितके कामों में इस प्रकार व्यय होना इस बातका द्योतक है कि आपके नैतिक विचार बहुत ऊंचे हैं। असहयोग आन्दोलनके बारेमें भी इधरकी जनतामें जो कुछ ज्ञान और उत्साह बढ़ रहा है, वह भी आपही के परिश्रमका फल है। अतः उन्होंने अबतक देशकी जो कुछ सेवा की है और इस त्याग एवं कठिनाइयोंके सामना करनेके अवसर पर जिस ढंगसे अपना कर्तव्य पालन किया है, उसको देखकर कांग्रेस की स्वागत कारिणी ने उन्हे अपना अध्यक्ष चुन लिया। परंतु नागपूर के "यंग पैट्रियट" को, एक असहयोग के समर्थकका स्वागत कारिणीका अध्यक्ष होना कब सहन हो सकता था? विशेष कर जब कि उसके साथी और समान विचार रखनेवाले आगामी कांग्रेस में असहयोग कार्यक्रम बिलकुल रद्द कर देनेकी तयारी ज़ोरोंसे कर रहे हैं। उसने इसी घटना को लेकर एक लेख लिख मारा है। उसका कहना है कि स्वागतकारिणी का यह कार्य इस 'डिमक्रैसी' के युगमें 'ओलाइगारकिज्म' है। उसकी राय है कि सेठ जमनालाल का चुनाव केवल धनाढ्य होनेके कारण हुआ और यह कि 'डा. मुंजे एण्ड कंपनी' ने सभापति और उपसभापति का पद सबसे अधिक रुपेय देनेवालों को नीलाम किया एवं इस प्रकार का समझोता पहले ही हो चुका था! हमारी समझमें नहीं आता कि जो लोग स्वयम बहुमतको मानना अपना कर्तव्य नहीं समझते और कांग्रेसद्वारा असहयोग प्रोग्राम स्वीकृत हो जाने पर भी उसे असफल बनाने की जीतोड़ कोशिश कर रहे हैं, उन्हें कांग्रेस के मामलों में बोलने और 'डिमोक्रेसी' की दुहाई देने का क्या अधिकार है? जहां तक हमें मालूम है, न तो सेठ जमनालाल और डा. मुंजे में अर्थ के सम्बन्ध में कोई समझौता हुआ है न वादा। अतः सहयोगी के सेठ जमनालाल के चुनाव से असन्तुष्ट होने का कारण यही है कि उन के मुकाबले में श्री. बळवन्तराव देशमुख नहीं चुने गए। और एक दूसरा कारण उस के असन्तोष का यह भी है कि श्री. जमनालाल मारवाड़ी हैं। अहम्मन्य महाराष्ट्र, मारवाड़ियों को किस दृष्टिसे देखते हैं, और वे कितने सुसभ्य एवं उदार हैं यह पाठक इसी से जान सकते हैं कि मराठी कोष में 'मारवाड़ी' शब्द का अर्थ लुच्चा, बदमाश और बेईमान है! ऐसी हालत में 'यङ्ग पैट्रियट' के शब्दों का मूल्य कितना हो सकता है, यह पाठक स्वयम् अनुमान कर लें। जान पड़ता है, सहयोगी की समझ में जो लोग बी. ए. एल. एल. बी. हों, राष्ट्रसभा में राष्ट्र भाषा का एक भी शब्द बोल समझ न सके और जो देश के लिए त्याग करने के समय कांग्रेस के फ़ैसले तक को मान्य न करें वे ही राजनीति कुशल हो सकते हैं और वेही सभापति पद के योग्य!

महिला संसार।

भारतीय रमणियाँ और असहयोग!

समय आ पंहुचा है जब कि भारतीय वीर बालाओं को अपने पूर्व गौरव का स्मरण कर कर्म क्षेत्रमें अवतीर्ण होना चाहिये और यह प्रमाणित कर देना चाहिए कि महमाया सीता और सावित्री का रक्त आजभी उनमें मौजूद है। भारतीय रमणियों के लिए यह कोई नवीन बात नहीं। इतिहास साक्षी है कि जब २ देशपर संकट आया है, जब २ पुरुष वर्ग कर्तव्य शिखर से गिरने लगा और जब जब सत्रुओं ने मदान्ध हो स्त्रियों पर अत्याचार आरम्भ किए, तब तब भारतवर्षकी स्त्रियों ने पीछे हटते हुओं को आगे बढ़ाया, मृत हृदयों में जीवन सञ्चार किया और अत्याचारों के पास के टुकड़े २ कर डाले बहुत सम्भव था कि पाण्डव अपनी दीन स्थिति और कौरवों के बल कौशल के विरुद्ध सिर उठने का साहस न करते परन्तु द्रौपदी ने वह अवस्था उत्पन्न ही न होने दी। जब भीम दुःशासनसे युद्ध करते २ कुछ विचलित होने लगा, उसी समय द्रौपदी निर्भय हो कर रण-क्षेत्र में चली गई और अपना खुला हुआ जूड़ा दिखा कर कहा कि, "धिक्कार है यदि तुम्हारे जीते मेरी प्रतिज्ञा अधूरी रहे और मैं जूड़ा न बांध सकूं!" इन शब्दों ने भीम के शरीर में विद्युत् शक्ति दौड़ा दी। उसने तत्क्षण दुःशासनको पछाड़ मारा! यह तो बहुत दूर की बात है, अभी अल्पकाल में जब जोधपुर के महाराज यशवन्त सिंह औरङ्गजेबसे हार खाकर जोधपुर लौटे तब हाड़ी महारानी ने किले के फाटक बन्द कर दिए। उसने कहा, "जो रणक्षेत्रमें पीठ दिखाता है वह मेरा पति नहीं, जोधपुर का नरेश नहीं और उस के लिए इस किले में स्थान नहीं।" अन्त में बहुत समझाने बुझाने और औरङ्गजेब से बदला लेने की प्रतिज्ञा करने पर वे किले में प्रवेश कर पाये। इसी प्रकार जयपुरकी महारानी 'महामाया' ने २० वर्ष तक देशकी स्वतंत्रता के लिए लोहा बजाया। विदुलाने रणसे भागे हुए अपने पुत्रको जीतने की आशा न होने पर भी फिर समरभूमि में भेजा। सलुम्बर रावजी की नवबधुने जब यह देखा कि रूपनगर राजकुमारी के सतीत्वकी रक्षार्थ उस के पति संग्राम में जाते हैं, परन्तु नववधू के सती होने में शङ्का होने के कारण दुचित्ते हो रहे हैं, तब उन्हें एकाग्रचित्त हो कर्त्तव्य पालन की शिक्षा देने और अपनी कर्त्तव्य निष्ठता प्रमाणित करने के लिए उस ने अपना सिर काट कर उनके पास भेज दिया। कहां तक कहें ऐसी अगण्य घटनाओं से इतिहास भरा पड़ा है।

नागौराधिपति अमरसिंह राठौड़ की रानियों ने ५०० सवारोंकी सहायता से संग्राम कर बादशाह की राजधानी आगरा के किलेमेंसे अमरसिंहजी की लाश निकाल ली और बलपूर्वक सती हो गई। देशपर अचानक शहाबुद्दीन की चढ़ाई की खबरें सुनकर संयोगिता ने पृथ्वीराज को इच्छा न रहते भी समर भूमिमें जानेको बाध्य किया।

इस समय देश के सम्मुख जीवन मरण का प्रश्न उपस्थित है। विदेशियोंने केवल भारत को ही नहीं, उसके आस पास के प्रायः सब देशों और प्रदेशों को गुलामी की जंजीर में जकड़ना निश्चय कर लिया है और इस प्रकार भारतकी पराधीनता की बेड़ियाँ अधिक मजबूत बनाई जा रही हैं। एक ओर यह हो रहा है, दूसरी ओर मुसलमानों के टुकड़े कर देश में फूट का बीज बो दिया गया है। महात्मा गांधीने देश को इस आपत्ति से बचाने के लिए असहयोग-संग्राम की घोषणा की है। कांग्रेस तक ने फैसला दिया है कि जिन्होंने पञ्जाब में अबोध बच्चोंतकका निरर्थक खून बहाया, सार्ध्वी स्त्रियोंका अपमान किया- और अब देश की आजादी को खतरे में डालने जा रहे हैं, उन नर-पशु नौकरों से मिलकर काम करना, उनके कामों में सहायता देना, उस पापमें भाग लेना है, और उन के दिए हुए पद पदवी और बैज "गुलामीकी सनद" [illegible] अधिक मूल्य नहीं रखते। जरूरत है कि देशका बच्चा २ इस संग्राम में महात्मा गांधी के झण्डे के नीचे खड़ा हो कर मातृ ऋण से उऋण होता परन्तु हो यह रहा है कि कुछ लोग तुच्छ स्वार्थ, खुशामद और निर्मूल भीरुता के कारण इस आन्दोलन से दूर भाग रहे हैं। उन्हें असहयोग[illegible] न्याय्यता और आवश्यकता में सन्देह नहीं, किन्तु साथही उस के अनुसार कार्य करनेका साहस भी नहीं।

आवश्यकता है कि भारतीय रमणियाँ इस समय अपनी कर्तव्य निष्ठता से प्रेरित हों और अपने पति एवं पुत्रों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित कर देश की रक्षा तथा सेवा करने के साथ २ अपने कुटुम्बों को कर्तव्यविमुखता के कलङ्कसे बचावें। मैं अपनी भारतीय बहिनों को सूचित करती हूं कि अब एक बात स्पष्ट है, वह यहकि इस विदेशी नौकर शाही के शासन [illegible] तरह हमारी बहिनों की वे इज्जती की गई वैसा असह्य व्यवहार अन्यत्र नहीं इस का कोई भरोसा नहीं। अतः यदि हमें इन बातोंकी रक्षा करनी है तो हमें आगे बढ़ना चाहिये [illegible] प्रमाणित कर देना चाहिये [illegible]

श्री [illegible]

जग, प्रभु! अब नारी-संसार!

जगे लोपती शौर्य, शक्ति, धृति, पातिव्रत, अधिकार।
राजस्थान वीर बालाओं का हो फिर अगार॥ १॥
मातृभूमि के अर्थ मुदित चित सहकर सब दुखभार।
शक्ति मयी हो जड़ जग तन्में करें शक्ति, सञ्चार॥ २॥
अबला हों, स्वातन्त्र्य शक्तिकी मूर्तिमान अवतार।
करें शक्ति त्रय करमें लेकर जननीका उद्धार॥ ३॥
बनें 'द्रौपदी' दुःशासनके निष्फल करें विचार।
बँधे तभी शीश-जूड़ा जब हो अरीसे संहार॥ ४॥

नासिकके गत कुम्भ मेलेमें मारवाड़ी महिलाओंने कर्मवीर पं० अर्जुनलाल जी सेठी की प्रेरणासे मारवाड़ी महिला मण्डल की स्थापना की। इसका प्रधान कार्यालय बम्बई में है। सभा-नेत्री सेठ जमनालाल बजाज की धर्मपत्नी जानकीबाई और उपनेत्री श्री कृष्णलाल वर्माकी धर्म पत्नी लीलावती देवी हैं। वर्धामें मण्डल की एक शाखा अच्छा काम कर रही है। स्त्रियोंकी साप्ताहिक सभा हिंद कन्या शालामें होती है जिसमें ५० तक उपस्थिति होजाती है। ये देवियाँ घरोंमें शिक्षाप्रचारका कार्य करती हैं।

[बारह वें पृष्ठ के आगे]

दस्तगत के [illegible] अर्थ है, [illegible] शताब्दियों [illegible] फल यह हुआ है। महात्मा गांधी जैसे साधुका भी विश्वास ब्रिटिश न्याय से उठ गया है और उन्होंने ऐसी नौकर शाहीका साथ देना पाप समझ असहयोगान्दोलन आरम्भ करने की व्यवस्था दी है। अब यह भारतवर्ष समाज का काम है कि वह 'भामा साह' के सदृश स्वतंत्र एवं न्याय के उपासकों का साथ दे निश्चय करे, या स्वदेश नौकरशाही [illegible]

"एक मर [illegible]

III 145

मारवाड़ी समाज और असहकारिता।

इस समय जब कि देशभरके सामने जीवन मरणका प्रश्न उपस्थित है, प्रत्येक समाज और व्यक्तिका कर्तव्य है कि अपनी और अपने देशकी वर्तमान स्थितिको भली प्रकार समझले एवं अपना कर्तव्य पथ शीघ्र [illegible] उनके [illegible] बने हैं। उनकी [illegible] आत्मोत्सर्ग और [illegible] [illegible] हैं। यद्यपि कुछ उनमें से बृटिशराज्यमें आ बसे हैं और अपनी सम्पत्तिभी खासी बनाली है, परंतु विवाह तथा अन्य सामाजिक सम्बन्धोंके कारण उनकाभी वहां आना जाना बनाही रहता है और यदि यह न बना रहै, तो भी वे रक्त के सम्बन्ध से मारवाडी ही हैं और मारवाडीही रहेंगे। जिस [illegible] परमाणुओंसे [illegible] बना है। [illegible] नहीं है। [illegible] तो बृटिश [illegible] स्थानही नहीं। वहाँकी जनता कहीं उन्हें कायर और विदेशियोंके खुशामदी समझती है, तो कहीं धनके लिये गरीबोंका रक्त चूसने वाले। सरकार भी इन्हें सबसे सीधे गुलामसे अधिक नहीं समझती। इनसब बातोंके कारण मारवाडी समाजके सुख दुख, मान अपमान और हिताहितका राजपूताना ही से सम्बन्ध है और उसके उद्धार के लिये मारवाडियोंको कोई परिश्रम एवं त्याग उठा न रखना चाहिये। परंतु साथही वे बृटिश इण्डिया से भी अलग नहीं रह सकते। संसारकी वर्तमान स्थितिमें परस्परके हिताहित इतने गुथे हुये हैं कि कोई प्रान्त तो क्या, कोई देशभी अपने पडोसियों से अलग रहकर सुखसे बैठ नही सकता। इसका एक और भी जबरदस्त कारण है। और वह है ब्रिटिश सरकार और देशी राज्योंका पारस्परिक सम्बन्ध। यह सम्बंध ऐसा है कि जिसके कारण भारतकी [illegible] नताकी उमंगोंको दबानेमें देशी [illegible] को विवश होकर ब्रिटिश [illegible] रकी सहायता करनी पडती [illegible] र देशी राज्योंकी प्रजा को [illegible] में बृटिश सरकारको। इसका [illegible] रण सन् १८५७ के गदरसे पूरी तरह मिलता है। अतः यह निश्चित है कि देशी राज्योंमें या बृटिश भारतमें जहांभी अन्यायसे मुक्त होनेके लिये प्रजा द्वारा प्रयत्न होंगे वहीं उन्हें कुचलनेके लिये देशी नरेशों को ब्रिटिश सरकारसे पूरी सहायता मिलेगी और सरकारको नरेशोंसे। इन विपत्तियोंको निवारण करने के लिये देशीराज्यों और ब्रिटिश भारतकी प्रजाका आपसमें मिलकर एक दूसरे के दुख सुखमें शामिल होना अनिवार्य है। सार यह कि राजस्थानियों को ब्रिटिश भारतवासियों के राजनैतिक आन्दोलनों में खुले दिलसे योग देना चाहिए और ब्रिटिश भारतवासियोंको राजस्थानियोंकी आकांक्षाओंकी पूर्तिमें सच्चे हृदयसे सहायता।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि समस्त भारतकी एकमात्र राष्ट्रीय संस्था 'कांग्रेस' है। परन्तु दुर्भाग्यवश अबतक न तो राजस्थानी ही,— चाहे वे देशी राज्योंमें रहते हों, चाहे ब्रिटिश भारतमें—उसके कार्योंमें यथोचित भाग लेते थे और न कांग्रेसही राजस्थानियोंके कष्ट निवारणकी ओर ध्यान देतीथी। किन्तु समयने पलटा खाया और यह बतला दिया कि न तो भारतकी सबसे सम्पन्न मारवाडी जनता और देशी राज्योंकी शूरवीर प्रजा के हाथ बटाये बिना भारतीय स्वतंत्रताका ही कोई आन्दोलन सफल हो सकता है और न कांग्रेस जैसी बलशाली संगठित शक्तिकी सहायता बिना राजस्थानियोंकेही दुख दूर होसकते हैं। आज भारतके बहुतसे बडे बडे उद्योग धंधे और व्यापार मारवाडियोंके ही हाथोंमें हैं और उनके धनसे भारतके बडे से बडे राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और शिक्षा सम्बंधी सुधारोंको लाभ पहुंचता है। परंन्तु केवल धनसे ही माताका ऋण चुक नहीं सकता। स्वतंत्रता देवी के उपासक थोडेसे पैसे देकर ही मुक्त नहीं हो सकते। उन्हें अपने सर्वस्वकी बलि देनी पडती है। कांग्रेसमें उच्च स्थान पानेके लिये उन्हें अबसे कहीं अधिक धन, कहीं अधिक समय और कहीं अधिक शक्ति खर्च करनी पडेगी। कांग्रेसके उठाये हुए

आन्दोलनों को सफल करनेके लिये उन्हे भीरुता, संकोच और खुशामद के परदेको चीरकर मैदान में आना होगा। कांग्रेस से मिलकर यदि तनमन धनसे मारवाडी समाज देशोद्धार में भाग लेगा तो विवश होकर कांग्रेसको उसे उचित स्थान देनाही होगा। वह अधिक दिन उसके दुःखोंकी अवहेलना नहीं कर सकेगी।

भारतकी राष्ट्रीय सभा कांग्रेसके कलकत्ते वाले विशेष अधिवेशनमें देशके सच्चे त्यागी नेता महात्मा गांधीके प्रस्तावानुसार देशके अधिकांश बुद्धिमानोंने मिलकर यह निश्चय किया है कि जब तक (१) पंजाबके अत्याचारों और खिलाफत के विषयमें हिन्दुस्थानियोंको पूर्ण न्याय न मिले और (२) भारत मे स्वराज्य स्थापित नहो, तब तक कोई भारतवासी ब्रिटिश सरकारको किसी प्रकार की सहायता न दे।

पंजाबके अत्याचारों को दुहराने की आवश्यकता नहीं सर माईकेल ओडेयरने स्वराज्यवादियों और पंजाबियोंके उठते हृदयोंको मसोसदेने के लिये अपनी राक्षसी शक्तिका जिस प्रकार प्रयोग किया, डायरने शान्त समूहोंपर जिस प्रकार गोलियाँ चलाईं, स्त्रियोंका अपमान किया हजारों को जेल भेजा, सैकडोंको कालेपानी और फाँसी पर लटकाया वह सब पर विदित है।

जलियाँवाला बागमें हजारों निःशस्त्र लोग जिनमें नन्हे नन्हे बच्चेभी थे, निर्दयतासे कत्ल [illegible] गये। पुरुषोंको नंगे करके कोडे लगाये गये, उन्हे पेटके बल चलने को विवश किया गया। विद्यार्थियोंको मीलों कडी धूपमें फिराया गया। निरपराध प्रजाको अनेक अमानुषिक यातनायें पहुंचाई गई और अपराधी अफसरोंको दण्डसे बचानेके लिये कानून भी पास कर दिया गया। इसपर तुर्रा यह कि वाइसराय भारत मंत्री, और पार्लियामेंट तकने हत्यारों और उनके हत्या काण्डकी प्रशंसा की।

जो हिन्दुस्थानियोंके साथ पंजाब में हुआ, वही खिलाफत के सम्बन्ध मे मुसलमानों के साथ हुआ। हिन्दुओंके लियेभी 'खिलाफत' एक बहुत बडा राजनैतिक प्रश्न है। अंग्रेज अपनी साम्राज्य तृष्णा बुझाने और रूसमें उठी हुई प्रजा सत्ताकी लहरके रोक देनेके लिये जी जानसे यह प्रयत्न कर रहे हैं कि टर्कीसे अफगानिस्थानतकका सब प्रदेश अपने

[शेष ९ वें पृष्ठ के अन्तमें]

चिट्ठी-पत्री।

श्रीमान् जयपुर नरेशकी सेवामें खुली चिट्ठी।

श्रीमान् महाराजाधिराजा चिरंजीव!

भगवान् की इसइच्छा को देखकर हम लोगोंको बड़ाही हार्दिक क्षोभ होताहै, कि इस समय पर कोई ऐसा सुपुत्र श्रीमहाराजके न हुआ, कि जिसके हाथोंमें राजका कार्य भार न्यायवत् सौंपकर श्रीमहाराज इस वृद्धावस्था में निश्चिंत होकर भगवान् का स्मरण करसकते।

अब मुझे मेरा धर्म इस बातकी प्रेरणा करता है कि मैं श्रीमान् को इस वृहत भारसे न्यायवत् भारहीन होकर परम आनन्दसे स-सुख भगवानका ध्यान करते हुये, अवशेष जीवनको व्यतीत करनेके शुभ मार्ग का बिना पूछे सदउपदेश दूं। जिससे कि राजा और प्रजाका परम कल्याण हो।

मैं श्री महाराजका शुभ चिंतक ब्राह्मण और प्रजाहूं। श्री महाराजकी छत्र छायामें जीवन पोषण और शिक्षा पाई है अतएव सदुपदेश करना मेरा धर्म है, इसपर कार्य करना आपका कर्तव्य है, । यदि इसपर ध्यान देकर कुछ व्यवस्था करेंगे तो तीनों लोकोंका यशलाभ पावेंगे और यदि इसपर ध्यान नहीं देंगे तो जन्म जन्मान्तर पश्चाताप करना होगा यह समयफिर कदापि नहीं मिलेगा। रीति बहुत सरल है मार्ग अत्यन्त सीधा है। उपदेश बड़ाही हितकर है। समय अनुकूल है देरी करना भूल है। वह है राज्य की वर्तमान कौन्सिल में थोड़ासा परिवर्तन करके पुनर्संगठन करना। सो सीधीसी बात है और यह संगठन होना चाहिये नीचे लिखे अनुसारः—

(संगठन)

जयपुरकी कौन्सिल के दो विभाग होने चाहियें (१) राज्य प्रतिनिधि भवन (२) प्रजा प्रतिनिधि भवन। प्रजा प्रतिनिधि भवन में ५२ सदस्य होने चाहियें, जिनमेंसे ३३ तो जयपुर राज की ३३ तहसीलों द्वारा निर्वाचित और १७ जागीरदारोंकी प्रजाद्वारा निर्वाचित और एक मंत्री (Secretary) और एक प्रधान (President) इन सबका निर्वाचन उसी प्रजा तंत्र पद्धतिसे होना चाहिये जिससे इंग्लैंडमें कौन्टियोंसे पार्लियामेण्टके मेम्बर चुने जातेहैं मंत्री और प्रधानको यही लोग निर्वाचित करलेंवें।

राज्यप्रतिनिधि भवनमें २६ सदस्य होने चाहियें जिनमें १२ राज्यकीय १२ निजामतों द्वारा निर्वाचित ८ जागीरदारोंकी प्रजाद्वारा निर्वाचित एक अमात्य (मुसाहिब) और एक मंत्री जिनको सदस्य स्वयं चुनें।

स्वर्गीय महाराजने कौन्सिल स्थापित करने और बावन कचहरियां खोलने आदिका सुयश प्राप्त कियाथा, अब यदि श्रीमहाराज इस कौन्सिलका ऐसा संगठन करदेंगे तो असीम यश पावेंगे और प्रजा प्रेमके आदर्श चरित्रका उदाहरण होंगे।

इस कौन्सिलका कार्य रहे बहुमत द्वारा राज्य कार्यका अन्तिम निर्णय करना.

मैंने मार्ग बता दिया। अब ग्रहण करना श्री महाराजकी इच्छापर निर्भर है। और इस मार्गमें ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भी बाधक नहीं होसकती है अतएव श्री महाराज इसपर अवश्य ध्यान देंगे, और रावण, मानधाता, विक्रम और श्री रामचन्द्रजी आदि महाराजाओंके इतिहास को स्मरण करें पर इतना अवश्य स्मरण रहै किः—शुभम्यशीघ्रम्।

एक बात और। मैंने सुना है महाराज उत्तराधिकारीके निर्वाचन का विचार कर रहे हैं। क्याही अच्छाहो यदि श्री महाराज उपरोक्त कौन्सिल संगठित करके उत्तराधिकारी निर्वाचनका अधिकार इसी कौन्सिल को दे दें।

प्रवासी जयपुरवासी "बन्सी"

कलकत्ते में राजपूताना मध्यभारत सभाका विशेष अधिवेशन।

राजपूताना मध्य भारत सभाके मंत्री श्रीवर चांदकरण शारदा प्रधान सेठ जमनालालजी बजाज सहकारी मंत्री श्री गणेश शंकर विद्यार्थी व कार्य कारिणी के सभासद श्री. वी. एस. पथिक, ठाकुर केसरी सिंह श्री. अर्जुनलाल सेठी, श्री. सत्यभक्त संपादक विजय आदि विशेष कांग्रेस के अवसर पर कलकत्ता पहुंचे और कांग्रेस के नेताओंके नाम खुली चिट्ठी, बीकानेर राज्य के घोर अत्याचार, मेमोरियल टू कांग्रेस लीडर्स आदि अनेक लेख हिंदी इंग्रेजी में सहस्रों की तादाद में छपा कर बांटे और लोगोंको राजपूताना मध्य भारत सभाके उद्देश्य समझाए तथा कांग्रेस के गण्यमान नेताओंका ध्यान देशी राज्यों के प्रश्न की ओर आकर्षित किया। मंगलवार को रात के ८ बजे श्री. माहेश्वरी सभा भवन में श्रीमान् राय बहादुर जमनालालजी बजाज वर्धा वालों की अध्यक्षता में सभा का विशेष अधिवेशन देशी रजवाड़ों के जुल्मोंसे पद्दा की, पीड़ित प्रजा की रक्षा के उपाय सोचने के निमित्त हुआ। उपस्थिति लगभग २००० के थी। निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुएः—

१ कलकत्ता प्रवासी राजपूताना एवं मध्य भारत निवासियों की यह विराट सभा राजपूताना मध्य भारत के विशेष अधिवेशन में एकत्रित होकर प्रस्ताव करती है कि देशी रजवाड़ों की कष्ट पीड़ित प्रजाके कष्टों को दूर करने के लिये तथ उन्हें देश की उन्नति में पूर्णतया साथ बनाए रखने के लिये समस्त देशी नरेशोंसे प्रार्थना करती है, कि बहुत शीघ्र अपने राज्योंमें उत्तर दायित्व पूर्ण शासन की व्यवस्था करें क्योंकि इसीमें राजा और प्रजा दोनों का कल्याण है।

'रामप्रसाद दूरकट'

जैसलमेर में स्वेच्छाचार

जैसलमेर—महाराजने एक राजनैतिक मामले में यहां के प्रतिष्ठित वकील बाबू सरदार मलजी मेहता को १६ माह सपरिश्रम कारावास की सजा और ४००) जुर्माना दण्ड दिया है। कहा जाता है इन्होंने शासनकी रेज़ीडेण्ट के पास समालोचना कीथी। इनकी सब सम्पत्ति छीन छीनाकर घरों पर सील लगाई गई है। इनके साथ २ यहां के माहेश्वरी स्कूल के मास्टर और उन के भाई को भी इसकी ओट में ऐसी ही सजा मिली है। यदि यह खबर झूठी नहीं है तो हमें महाराजकी काली नौकरशाही के दुष्कृत्यों और ज़ार शाही पर दुःख है। मि• सरदारमल मेहता जनता का पक्ष लेने वाले थे, जिससे काली नौकर शाही की आंखोंमें खलरते थे। कई समय रिश्वतखोरी आदि मामलों में जेल गए हुए और सम्प्रायाय एक वकील की आज कल शासन कार्यों में चलती है (जैसी रूस में रासपुटिन की चलीथी) उससे आप टक्कर लिया करते थे। हमें आपको दण्ड मिलने का खेद नहीं है— आप देशके नाम पर जेल गए हैं, अभी काली नौकर शाही की स्वेच्छाचारिता द्वारा हमें बलिदान तक भी होना पड़ेगा। हम इनकी मुक्ति के लिए महाराज से प्रार्थना नहीं करेंगे— क्योंकि "जुल्मों को सहने से जुल्मों का अंत होता है" अभी नवम्बर में लेडी चेम्सफोर्ड वहां जाने वाली है। रेज़ीडेण्ट साहब भी शायद वहां जायंगे। हम रेज़ीडेण्ट साहब से निवेदन करते हैं कि "वृटिश न्याय" के नाम पर आप उन दुखी हृदयों की आहें सुने!

"एक जैसलमेरी"

11/147

ताजा समाचार।

—**पुर्तगाल**—रूटरकी खबर है कि पुर्तगालकी राजधानी और बड़े बड़े नगरोंमें मजदूरोंकी एक व्यापक हड़ताल शुरू हुई है। सरकारी लोग इसे क्रान्तिकारी आन्दोलन समझते हैं रेल, डाक, तार, जहाजों और बँदरगाहोंके श्रमजीवियोंने काम बन्दकर दिया है।

—**इटली**--प्रधानमंत्री गिलयटने रूसी राजदूतको रोममें रखना स्वीकार कर लिया है जिसका अर्थ यह है कि इटलीने रूसकी बोलशेविक सरकारको मान लिया साथही धातुओंके कारखानोंके मजदूरोंकी बडी जीत हुई है। उन्होंने अन्यश्रेणीके मजदूरोंकी सहायतासे देशके प्रायः सभी बड़े बडे कारखाने हस्तगत कर लिये है।

—इंडिपेंडेंट को समाचार मिला है कि जौनपुरको डिस्ट्रिक्ट माजिस्ट्रेटने कई व्यक्तियोंको नोटिस दिया है कि वे खिलाफत आन्दोलन बंद करदें वरना मुकद्दमे चलाये जायेंगे। उन्नावके डिप्टी कमिश्नरने भी ऐसेही नोटिस निकाले हैं। सुनाहै सर्कल इनस्पेक्टरोंके नाम खिलाफतके मुख्य कार्यकर्ताओंपर कानूनी कार्यवाही आरंभ करने के लिये गुप्त सर्कुलर जारी किये गये है।

—चीनमें भयकर दुष्काल पड रहा है। अन्न की कमीसे लाखें प्राणियोंकी जानें जोखिम में हैं। 'मार्निंग पोष्ट नामी विलायती पत्र के जारी किये 'डायर फंड' में दो लाख रुपये से ऊपर जमा हो गये हैं।

—अलीगढ कॉलिजके छात्रोंके साहस और वीरता के साथ मद्रास के युवक संघने सहानुभूति प्रकट की है। लाहौर इस्लामिया कॉलेज के छात्र साथ देने को तय्यार हैं।

आयर्लैंड का होमरूल (स्वराज्य बिल पार्लिमेंटने १९ अक्तुबर को कमेटीमें लेनेकी सूचना निकाली है। जर्मनी का लाइनर १६ हजार टन वाली जहाज विक्टोरियो लुई पर हमबर्गमें आग लग गई।

रबरकी खेती करनेवालोंकी अन्तर्राष्ट्रीय सभाने अबसे पौना माल पैदा करना निश्चित किया है।

मद्रास महाजन सभा में उद्देश्योंमें से सरकारको प्रार्थना करने वाली धारा निकालदेनेकी बात चल रही है। चिटगांवकी जनताने कलकत्तेके बैरिस्टर श्रीयुत जे. एम. सेन गुप्तके सभा पतित्वमें असहयोग के साथ ही भारतकी पूर्ण-स्वाधीनताका भी प्रस्ताव किया है।

सरकारने खालसा कालेज अमृतसर को शीघ्र सिख विश्वविद्यालय बना देनेकी आशा दिलाई है।

नागपुरकी डिस्ट्रिक्ट कौंसिलने वायसराय को मान पत्र देने का विचार सार्वजनिक विरोध के कारण छोड दिया है।

दिल्लीके सबाह नामी राष्ट्रीय पत्रसे २०००) की जमानत मांगी गई है। पत्रि दो सप्ताह बंद रहेगा।

महात्मा गांधी १८ तारीख को अमृतसर पहुंचे आपने बैजनाथ नारायण क्लाथ फैक्टरी नाम के देशी कारखाने को देखा।

अहमदाबाद कालीमाता के पुजारियों को सेठ जमनाभाई तथा मंगलदासकी ओरसे ६००) सालका अन्न मिलने पर उन्होंने पशुबलि बंद करदी।

गोरे और अधगोरोंसे भारतीयोंकी रक्षार्थ जो फंड खुला है उसमें मुम्बईके मि. ए. बी. चोथियाने १००) रुपये दिये हैं।

झांसी में प्रायः ५००० लोकोवर्कशाप के मजदूरोंने हडताल कर दी है।

आयर्लैंड के लंडनडरी तथा बेल फास्ट नगरों में सिनफीनरने राजभक्तों और यूनियनिस्टों पर गोलियां चलाई।

पैलिहने विलना नगर खाली करनेसे इनकार कर दिया है।

अंग्रेजी जनरल टाउनशैंड जनरल रेंगल से मिलकर काम करेंगे।

सी. पी. के पण्डित विष्णुदत्त शुकुल, श्री. गोविंददास श्यामसुन्द तथा लिबलकरने कौंसिलको उमेदवारी रा. ब. दामोदरराव तथा रा. सा. गोकुलचंदने पदवियां और सेठ किशोरीलालने आनरेरी मजिस्ट्रेटी छोड दी।

२३ अकतुबरको मुम्बईमे मजदूरोंकी एक महती सभा होगी। कर्नल वेजवुड और लालाजपतराय भी सभामें आवेंगे।

विशेष कॉंग्रेसपर श्री. मंजरअलीने 'डेमोक्रेट' पत्रमें जो लेख लिखा थी उसपर प्रयागके डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेटने इंडिपेंडेंट प्रेस वालोंको जमानत जब्त करनेकी धमकी दी है।

--पानीपतके दोनों मौलवियों को ६ वर्ष कालापानी और एक वर्ष कैद का दण्ड मिला है।

टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनीने न्यूयार्क की एक अमरीकन जर्मन फर्म को २५ वर्ष तक जमशेद कारखानेको अपनी आवश्यकतासे बचा हुआ सब माल देते रहनेका ठेका दिया है। यदि ऐसा हुआ तो भारत के धंधोंको बडा धक्का पहुंचेगा।

बगदाद और करबलाके बीचमें अंग्रेजों और अरबोंमें लडाई हो रही है।

सेंट्रल लिथुएनियाने स्वाधीन प्रजातंत्र राज्य की घोषणा कर दी है।

भारत के वायसराय पदके लिये लॉर्ड सेल्वोर्नका नाम लिया जा रहा है।

—लाहोरके एक गोरे गोलंदाजने अमरोहेके श्री लक्ष्मीनारायण को थप्पड मार दी। आखिर सबके सामने माफी मांगली। अंग्रेजी मुविधा!

—रूसी बालेशेविक प्रतिनिधि एम जिनोवीफने कहा है कि जर्मन साम्यवादी यदि उनसे मिल जायें तो रूस रुपये की अच्छी सहायता देगा।

—वर्मामें इरावदी फ्लाटिला कंपनी के जहाजी खलासियोंने एकदम हडताल करदी है। वे थोडा काम और अधिक मजदूरी चाहते हैं।

—सीलोन की विशेष कांग्रसनें असहयोग का प्रस्ताव पास किया है।

आक्सफोर्ड विश्व विद्यालयने पहली बार स्त्रियोंको डिग्रियां दी हैं।

आयर्लैंडके डबलिन नगरमें फौज और सिविलियनों में जोरका झगडा हो गया। कार्क के लॉर्ड मेयर जो जेलमें है ६४ दिनसे उपवास कर रहे हैं।

—मुंबई, कलकत्त और मद्रासके मजदूरोंमें कई दिनसे अशान्त फैल रही है। इस सप्ताहमें मुम्बईके गैसवालों ट्रामवालों और विशेषतः पोस्टमैनों की हडतालोंने भयंकर रूप धारण कर लिया है। डाक, रोशनी और ट्रामोंकी अव्यवस्थासे सर्व साधारणको बडा कष्ट है। मुम्बईकी महंगाई और वेतनकी कमीको देखते हुये हडतालियोंकी मांगें अधिक नहीं है। पूंजी वालोंके कानपर जूं तक नहीं रेंगती और सरकार बैठी बैठी तमाशा देख रही है। सिंधमें गेहूं भेजनेका प्रतिरोध होने लगा है और इसी सप्ताह मुम्बई के मजदूरोंकी एक महती सभाने प्रस्ताव किया है कि बंदरगाह और रेल्वे के मजदूर बाहर जाने वाले गेहूंको लादना छोडदें। अंग्रेजी मजदूरोंके 'डेली हेरल्ड' नामी पत्रको भारत में आनेसे रोक देनेका विरोध किया गया है।

पत्रके नियम

१. " राजस्थान केसरी " प्रतिसप्ताह ठीकसमय पर रविवारको वर्धासे निकलता है और उसी-दिन ग्राहकोंके नाम रवाना कर दिया जाता है।

२. रा० के० का वार्षिक मूल्य भारतमें दशहरेके पहले ३) बादमें ३॥) और विदेशोंमें ७) होगा वर्धा शहरके ग्राहकोंसे दशहरेके पहले ३॥) और पश्चात् ३) लिए जायंगे।

३. नमूनेकी प्रति मंगाने पर रवाना की जायगी

४. कार्यालयमें मूल्य पहुंच जाने पर ही पत्र जारी होगा ग्राहकों से विशेष अनुरोध है कि वे मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेजा करें।

५. ग्राहकोंको पत्र व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर और नए ग्राहकोंको वी. पी. पी. नम्बर अवश्य लिखना चाहिए। अन्यथा उनकी शिकायतकी जांच असम्भव होगी।

६. तीन महीनेसे कम के लिए पता नहीं बदला जायगा। अतः थोडी अवधि के लिए पता बदलवाने की आवश्यकता होने पर पाठकोंको डाकखानेसे ही ऐसा प्रबंध कर लेना चाहिए।

७. ग्राहकों और पत्र प्रेषकोंको अपना नाम व पता पूरा और साफ लिखना चाहिए।

८. लेख कविताएं आदि सम्पादक " राजस्थान केसरी " और विज्ञापन एवं प्रबन्ध विभागसे सम्बन्ध रखने वाले पत्रादि " व्यवस्थापक राजस्थान केसरी " के पते पर आने चाहिएं।

९. किसी लेख या कविता को घटाने बढ़ाने और छापने न छापनेका अधिकार सम्पादकको होगा। पिछले अङ्कों की प्रतिएं यदि कार्यालयमें होंगी तो एक महीने तक की =) फी प्रति और उससे अधिक की ।-) फी प्रतिके हिसाबसे दी जायगी हां, यदि व्यवस्थापक चाहें तो इस मूल्य में कमी कर सकेंगे।

व्यवस्थापक

राजस्थान केसरी वर्धा. (सी. पी.)

भारत गवर्नमेण्ट से रजिष्टर किया हुवा
अपने विचित्र गुणों से थोडे ही समय में संसार को मोहित करने वाला

जगत प्रसिद्ध

आरोग्य सिंधु

सम्पूर्ण रोगोंकी रामबाण महौषधि है

प्रत्येक गृहस्थ को इस की जरूरत पडती है। एक शीशी हर वक्त अपने पास मौजूद रखनी चाहिये। यक्तरर सर्वेभित्र का काम देगी जिन्होंने एक बारभी इसे अजमाया है वेसदा के लिये मुक्त कंठसे इस की प्रशंसा करते हैं पाठकोंके अवलोकनार्थ आरोग्यसिंधु के विषय में केवल २ प्रशंसा पत्रों की नकल नीचे दीजाती है सेवन विधि शीशी के साथ रहती है हरेक स्थानमें आरोग्य सिंधु बेचनेके लिये एजेंटों की जरूरत है पत्र व्यवहार कीजिये की. ॥|) शीशी दर्जन ६ ॥|) रू.

देखिये

वर्धा के सुप्रसिद्ध रईस आनरेरी माजिस्ट्रेट रायबहादुर सेठ जमनालालजी बजाज क्या कहते हैं:—

हनुमान कम्पनी वर्धा से हम को आरोग्य सिन्धु की जो शीशियां प्राप्त हुई हमने उक्त औषधि का स्वयं उपयोग किया तो गुण कारक पाई, गई। औषधि शीघ्र ही फायदा देने वाली है।

आपका जमनालाल बजाज

संपादक मारवाडी नागपुर वर्ष ११ अंक २४

हनुमान कम्पनी वर्धा की आरोग्यसिंधु एक ऐसी अजीब दवा है कि बदहजमी. हैजा. उल्टी दस्त आदि कई बिमारियोंके मिटाने में बिजली कासा असर रखती है इस को हमने कई बार अजमाया है। हम निः संकोच इस की प्रशंसा करते हैं।

मिलनेका पता—हनुमान कम्पनी वर्धा सी. पी.

हिन्दी मराठी और अंग्रेजी
में

❀ छपाई का ❀

सबसे उत्तम, सस्ता और ठीक समय पर काम देनेवाला

' राजस्थान केसरी ' छापखाना १ अक्टोबरसे जारी हो गया

हर किस्मके ब्लाक्स भी मौजूद हैं। परीक्षा प्रार्थनीय है।

मैनेजर

राजस्थान केसरी,

छापखाना वर्धा.